स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, नांदेड़

मानव्य विज्ञान विद्या संकाय के अंतर्गत पीएच्.डी. (हिंदी) उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रुपरेखा

“रणेंद्र के साहित्य का अनुशीलन”

शोधकर्ता
शेख अलीम हबीबसाब
(एम.ए., एम.फिल.)

शोधनिर्देशक
प्राचार्य डॉ. जोगेंद्र सिंह बिसेन
(एम.ए. एम.फिल., पीएच्.डी.)
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर
जि.लातूर-413512

एप्रिल - 2019

भूमिका :

साहित्य समाज का आईना होता है। इस नजरीये से देखा जाए तो उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ यह ऐसी विधाएँ हैं जो अपने आप में अधिकाधिक विषयों को बड़े कलात्मकता के साथ समेटती है। इसी तरह से आदिवासी समाज को लेकर पिछले दस वर्षों में हिंदी में कई कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास और आत्मकथाएँ प्रकाशित हुई हैं। इन सबमें आदिवासी जीवन और समाज के विविध रूप और पक्ष यथार्थवादी और संवेदनशील ढंग से अभिव्यक्त हुए। इस क्रम में रणेंद्र के उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ काफी चर्चित रही।

भारत सबसे ज्यादा शोषित वर्ग के तौर पर है। भारत में खेत में काम करनेवाला किसान और गधा मजदूरी करनेवाले मजदूरों की गिनती होती है। पर आदिवासियों की हालत सबसे ज्यादा गई गुजरी है। उनका शोषण कागज पर लिखकर और कई बार बिना लिखे किया जा रहा है। ऐसे में इस समुदाय का अलगाव, उसका पिछड़ापन बढ़ेगा ही। इन बुनियादी सवालों को देखे, सुने सुलझए बिना विकास की बात करना बेमानी होगी, हमें विकास की ओर बढ़ना है तो हमें आदिवासी समाज को भी साथ लेकर बढ़ना चाहिए। उनपर हो रहे अत्याचार पर ध्यान देना चाहिए जो गरीबों को किड़े-मकोड़े समझते हैं। उनका विरोध करने का प्रयास रणेंद्र जी ने अपने साहित्य लेखन के माध्यम से किया है। आदिवासी समाज का किस तरह से शोषण किया जा रहा है इसका भी पर्दाफाश करने का काम अपने साहित्य द्वारा किया है।

हजारों सालों के बीत जाने के बावजूद आज भी आदिवासी जंगलों में रहकर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। इनकी दुर्दशा पर कभी किसी का ध्यान नहीं गया। उलटा उन्हें ही तिरस्कार की नजरों से देखा गया है। आधुनिक भारत के निर्माण में और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए उनका योगदान बहुत रहा है। बिरसा मुंडा, सिद्दा कानु, उमेद बसवा आदि ऐसे बहुत से वीर आदिवासी थे जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपना बलिदान दिया है। लेकिन आज आदिवासी शब्द के उच्चारण से ही हमारे सम्मुख खड़ा हो जाता है प्रत्येक सदी से उन्हें छल गया, सताया गया, नंगा किया गया समाज और सोची समझी साजिश के तहत उन्हें असंगठित रखा गया ऐसा समाज जो स्वतंत्र परंपरा सहित सालों से गाँव देहातों से दूर घने जंगलों में रहनेवाला आदिवासी समाज कहलाता है। आदिवासी सभी विषयों से संपन्न हैं जैसे-

पानी, खनिज, वन संपदा, उर्वर भूमि आदि। फिर भी सरकार के गैर जिम्मेदारी के कारण आदिवासी गरीबी में जीते हैं। आदिवासियों को कुचलकर जंगल की संपदा को लूटने की प्रथा गोरों से ही आ रही है। सरकार से लाई जाने वाली परियोजनाओं के कारण आदिवासी लूटमार के शिकार बनते जा रहे हैं। गरीबी, बेरोजगारी और तरह-तरह के कारणों से ज्यादातर आदिवासी लोग जंगल और पहाड़ को छोड़कर नगरों की ओर जा रहा हैं। आदिवासी लोग छोटे-बड़े काम करते हुए जीवन बिताते हैं। अगर उनको काम नहीं मिलता है तो आदिवासी नारी को अनैतिक कार्य भी करने पड़ते हैं। ये लोग अन्यों की बात पर विश्वास नहीं रखते। इसलिए उनमें थोड़ा सा बदलाव लाना चाहें तो क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए प्रयत्न करना पड़ेगा। राजनीतिक नेताओं को भी बाहर आकर आदिवासी लोगों की समस्याओं पर आवाज देनी चाहिए।

रणेंद्र ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से आदिवासियों का आत्मसम्मान अस्तित्व की रक्षा और निरंतर संघर्ष से जूझते रहने की कहानी को प्रसिद्ध किये हैं। आज हम कह सकते हैं कि, विश्व एक गाँव बन गया है। लेकिन अपनों से हम बहुत दूर गये हैं। भूमंडलिकरण के नाम पर शोषण का नया तरीका पूँजीवादियों ने ढूँढ निकाला है। भूमंडलिकरण आदिवासियों के समक्ष ऐसा खतरनाक राक्षस रूप में आ गया है जो उनका जीवन बर्बाद ही कर देता है। इस परिप्रेक्ष्य में रणेंद्र के कहानी, उपन्यास तथा कविताओं का अनुशीलन कर निष्कर्ष दिए जाएँगे।

रणेंद्र के साहित्य का अनुशीलन

प्रथम अध्याय : आदिवासी विमर्श स्वरूप एवं परिभाषा

1.1 आदिवासी शब्द की व्युत्पत्ति

1.2 आदिवासी शब्द का अर्थ

1.3 आदिवासी विमर्श की परिभाषा

1.4 आदिवासी विमर्श का स्वरूप

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय: रणेंद्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

2.1 रणेंद्र का व्यक्तित्व

2.2 रणेंद्र का कृतित्व

तृतीय अध्याय : रणेंद्र की कहानियों का कथ्य एवं शिल्प

3.1 छप्पन छुरी बहत्तर पेंच कहानियों का कथ्य

3.2 रात बाकी एवं अन्य कहानियों का कथ्य

3.3 रणेंद्र की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन

3.4 रणेंद्र के कहानियों की भाषा शैली

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : रणेंद्र के उपन्यासों का कथ्य एवं शिल्प

4.1 ग्लोबल गाँव के देवता उपन्यास का कथ्य

4.2 गायब होता देश उपन्यास का कथ्य

4.3 गूँगी रुलाई का कोरस उपन्यास का कथ्य

4.4 उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन

4.5 उपन्यासों की भाषा शैली

निष्कर्ष

पंचम अध्याय : रणेंद्र के कविताओं का अनुशीलन

5.1 थोड़ा-सा स्त्री होना चाहता हूँ में संकलित कविताओं का अनुशीलन

निष्कर्ष

षष्ठम अध्याय : उपसंहार

अ) परिशिष्ट

आ) मूल ग्रंथ

इ) आधार ग्रंथ

ई) इंटरनेट विकिपीडिया

1) अनुसंधान कार्य :

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए विवेचनात्मक अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा। समग्र साहित्य का विचेनात्मक संदर्भों से प्रमाणित कर निष्कर्ष दिये जाएँगे।

2) अनुसंधान का उद्देश्य :

"रणेंद्र के साहित्य का अनुशीलन" इस अनुसंधान कार्य में मेरे उद्देश्य इस प्रकार है-

अ) अज्ञानता और पिछ़डेपन के कारण सताये गये आदिवासी समाज को व्यक्तीगत भाव भूमि से ऊपर उठकर सामाजिकता के स्तर पर पहुँचाना।

आ) रणेंद्र जी के साहित्य को परखना एवं आदिवासी समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना।

3) अनुसंधान पद्धतियाँ :

ज्ञान का कोश इतना विस्तृत है कि, इसको समग्र रूप से प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए अध्ययनार्थी को उसे छोटे-छोटे भागों में विभाजीत कर ज्ञान ग्रहन करना पड़ता है। इसलिए अपने शोध कार्य की व्यापकता को देखकर विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग कर अनुसंधान का कार्य पूरा किया जायेगा।

4) अनुसंधान की उपयोगिता :

"रणेंद्र के साहित्य का अनुशीलन" यह अनुसंधान कार्य के उपरांत यह ज्ञात होता है कि, रणेंद्र के साहित्य में उन्होंने आदिवासी समाज का चित्र रेखांकित किया है। जिसमें मनुष्य की सही अथवा गलत छवि की पहचान होती है। रणेंद्र जी का उद्देश्य है कि, आदिवासी मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और आदिवासी समाज के जीवन तथा उनकी समस्याओं को सुलझाना समकालीन आदिवासी उपन्यासकारों ने भी प्रमुख रूप से आदिवासी समाज की समस्या और उनकी मानसिकता को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। रणेंद्र अपने साहित्य में आदिवासी जीवन परिस्थिति में भौतिक सत्यों की प्रामाणिकता दी है तथा परंपरा का विरोध दिखाया है। नए समाज से तादाम्त्य स्थापित करने के लिए रणेंद्र अपने साहित्य में नई दृष्टि पैदा की है।

5) उपलब्धियाँ :

अ) रणेंद्र के साहित्य का अनुशीलन इस अनुसंधान कार्य में आदिवासी समाज का जो चित्रण हुआ है उस चित्रण के माध्यम से आदिवासी समाज की समस्याओं को अवगत किया जाएगा।

आ) आज आदिवासी समाज राजनैतिक क्षेत्र तथा राजनीति से कोसो दूर है। यह चित्र अवगत हो जाएगा।

इ) वर्तमान घटित घटनाओं के प्रति आदिवासी समाज सचेत दिखाई देगा।

ई) आदिवासियों के उत्थान हेतु शिफारिशें की जाएगी।

6) अनुसंधान की व्याप्ति और सीमाएँ :

"रणेंद्र के साहित्य का अनुशीलन" यह शोध प्रबंध हिंदी साहित्य की व्यापक आयाम की अभिव्यक्ति करता है। प्रस्तुत विषय पर अनुसंधान की रुपरेषा लिखते समय इस आदिवासी विषय के विविध आयाम मेरे सामने आये हैं।

प्रथम अध्याय : आदिवासी विमर्श स्वरूप एवं परिभाषा

इस प्रथम अध्याय में आदिवासी विमर्श की व्याख्या और उसके स्वरूप और अर्थ और परिभाषा दी जाएगी। हिंदी साहित्य में खासकर आदिवासी साहित्य को लेकर उनके अनेक प्रकार की आदिवासी जनजातियाँ और उनके अनेक प्रकार के जीवन-विधान, रीति-रिवाजों और उनकी जीवन शैलियों के बारे में भी जानकारी दी जाएगी तथा निष्कर्ष दिए जायेंगे।

द्वितीय अध्याय: रणेंद्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में मैंने रणेंद्र जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व के उपर प्रकाश डाला है। रणेंद्र मुलत: झारखंड के आदिवासियों के जीवन से परिचित हैं। इसी वजह से उन्होंने लेखन कार्य आदिवासियों पर ही ज्यादा किया है। और इसकी विस्तार से जानकारी दूसरे अध्याय में दी जाएगी। रणेंद्र के व्यक्तित्व में उनके जीवन से संबंधित जानकारी संम्मिलित की जायेगी तथा कृतित्व में उनकी रचनाओं का अनुशीलन कर निष्कर्ष दिये जायेंगे।

तृतीय अध्याय : रणेंद्र की कहानियों का कथ्य एवं शिल्प

इस अध्याय में रणेंद्र जी के कहानियों का कथ्य एवं शिल्प का अध्ययन करना है और रणेंद्र जी के कहानियों का निचोड़ इस तृतीय अध्याय में दिया जायेगा। साथ ही शिल्पगत अध्ययन कर निष्कर्ष दिए जायेंगे।

चतुर्थ अध्याय : रणेंद्र के उपन्यासों का कथ्य एवं शिल्प

इस अध्याय में रणेंद्र जी के उपन्यासों का कथ्यगत विश्लेषण किया जायेगा। शिल्पगत अध्ययन कर निष्कर्ष दिये जायेंगे।

पंचम अध्याय : रणेंद्र के कविताओं का अनुशीलन

इस पंचम अध्याय में कविताओं का अनुशीलन किया जायेगा तथा निष्कर्ष दिये जाएँगे।

षष्ठम अध्याय: उपसंहार

प्रबंध के सभी अध्यायों का निचोड़ उपसंहार प्रस्तुत करके निष्कर्ष दिये जाएँगे तथा शिफारसें की जायेंगी।

संपूर्ण अनुसंधान के उपरांत यह ज्ञात होता है कि, गायब होता देश, ग्लोबल गाँव के देवता, गूँगी रुलाई का कोरस उपन्यासों और कहानी में रात बाकी एवं अन्य कहानियाँ, छप्पन छुरी बहत्तर पेंच कवितासंग्रह में थोड़ा-सा स्त्री होना चाहता हूँ में आदिवासी मानव का चित्र दिखाई देता है। रणेंद्र जी के साहित्य लेखन का उद्देश्य है, आदिवासी मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उनके रहस्यों को सुलझाना इसलिए साहित्य को समाज का आईना कहा गया है। इस प्रकार से रणेंद्र के साहित्य पर अनुसंधान करने के पश्चात निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते है।

अ) रणेंद्र के साहित्य में आदिवासी समाज का जो चित्रण हुआ है उस चित्रण के माध्यम से आदिवासी समाज की सभी समस्याओं को अवगत किया जाएगा।

आ) आदिवासी समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक तत्त्व उनके आचरण पद्धति को स्विकार किया जाएगा।

शोधनिर्देशक

प्रधानाचार्य डॉ.जोगेंद्र सिंह बिसेन
(एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.)
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर
जि.लातूर-413512

शोधकर्ता

शेख अलीम हबीबसाब
(एम.ए., एम.फिल)